4677

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

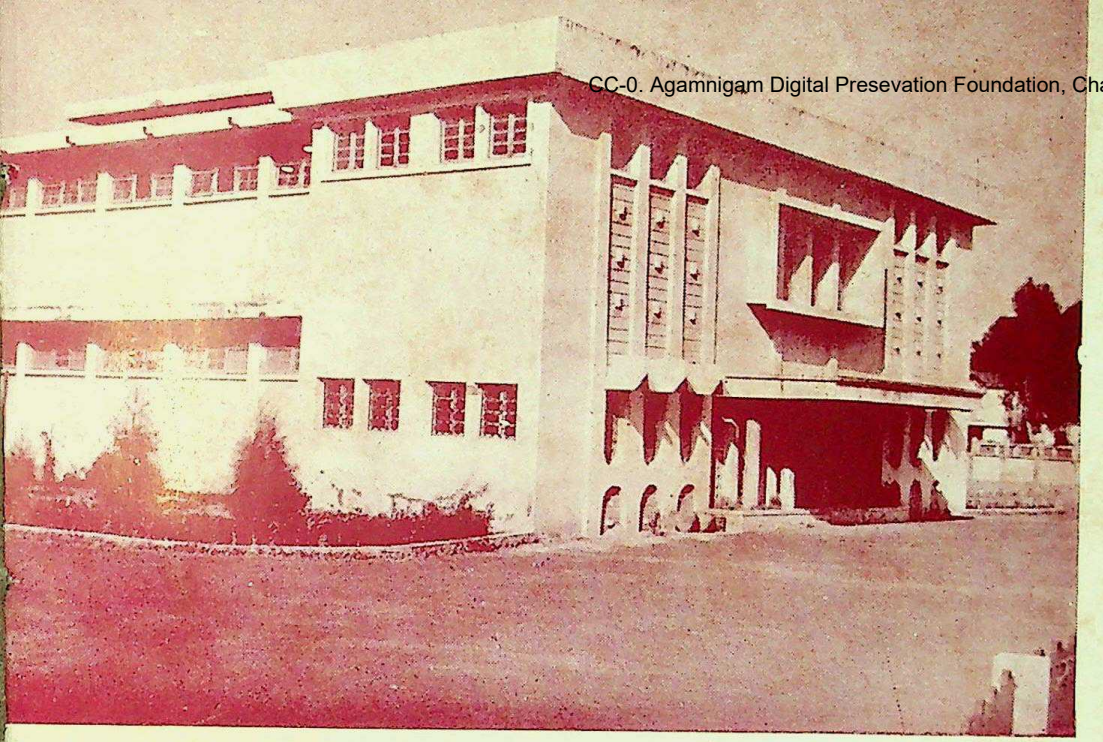

Library
Pl. enter with Acc. No.
1971

रानी दुर्गावती संग्रहालय जबलपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रानी दुर्गावती संग्रहालय, जबलपुर

*

मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री

श्री श्यामाचरण शुक्ल

के कर-कमलों द्वारा

उद्घाटन

*

दिनाँक १२ दिसम्बर १९७६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

4677

संग्रहालय खुलने का समय

प्रातः १० वजे से सायं ५ बजे तक

प्रत्येक सोमवार एवं राजपत्रित

छुट्टियों के दिन बन्द रहेगा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रानी दुर्गावती संग्रहालय, जबलपुर

उल्लेख मिलते हैं कि लगभग सौ वर्ष पूर्व जबलपुर में एक संग्रहालय था जिसमें जिले के विभिन्न स्थानों से शिलालेख तथा अन्य महत्वपूर्ण पुरातत्त्व सामग्री संगृहीत की गई थी। बाद में वह संग्रहालय बन्द कर दिया गया। उसकी कुछ सामग्री नागपुर के केन्द्रीय संग्रहालय में चली गयी और बाकी इधर-उधर हो गई।

जबलपुर जिले में पुरातत्त्व सामग्री की बहुलता है। इस क्षेत्र में प्रागैतिहासिक मानव की कृतियाँ प्राप्त हुई हैं, त्रिपुरी जनपद के सिक्के प्राप्त हुए हैं और रूपनाथ में मौर्यवंशी राजा अशोक का लघु शिलालेख विद्यमान है। जबलपुर के निकट गाँधार शैली की बौद्ध प्रतिमाएँ भी उपलब्ध हुई हैं। गुप्तकालीन मन्दिर सिहोरा तहसील के तिगवा नामक ग्राम में स्थित है। कलचुरि वंश के राजाओं की राजधानी इसी क्षेत्र में होने के कारण त्रिपुरी (वर्तमान तेवर) तथा अन्य स्थानों में प्राचीन अवशेष मिलते हैं। त्रिपुरी में पुरातत्त्वीय उत्खनन भी किया गया था।

जबलपुर सम्भाग और विशेषकर जिले की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक सामग्री की सुरक्षा, शोध और सर्वसाधारण की जानकारी के लिए उसका संग्रह तथा समुचित प्रदर्शन किया जा सके, इस दृष्टि से जबलपुर नगर में एक आधुनिक प्रकार का संग्रहालय स्थापित किये जाने की आवश्यकता विगत २५ वर्षों से अनुभव की जा रही है। इसके लिए स्थानीय जिला पुरातत्त्व संघ का सतत प्रयास चलता रहा है।

वर्ष १९६४ में नगर निगम जबलपुर द्वारा रानी दुर्गावती की चतुर्थ शताब्दी की स्मृति में एक विशिष्ट समारोह का आयोजन किया गया था। उस वीराँगना की ४००वीं बलिदान तिथि को मनाने के साथ नगर निगम ने निर्णय लिया कि शासन के सहयोग से जबलपुर में एक संग्रहालय की भी स्थापना की जाए। तदनुसार दिनांक २४ जून १९६४ को मध्यप्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री पं० द्वारकाप्रसाद जी मिश्र के कर्मठ करों से मोतीलाल नेहरू उद्यान में रानी दुर्गावती संग्रहालय के भवन का शिलान्यास सम्पन्न हुआ।

संग्रहालय भवन—

लगभग साढ़े नौ लाख रुपये के व्यय से रानी दुर्गावती संग्रहालय की दो-मंजिला सुन्दर इमारत बनकर तैयार हुई है, जो स्वयं में वास्तुकला का एक सुन्दर नमूना है। भवन के चारों ओर नयनाभिराम पार्क है और भवन को घेरती हुई एक दीवाल है जिसमें पूर्व और पश्चिम की ओर दो प्रवेश द्वार हैं। भवन की भूतल मंजिल में तीन और उसी प्रकार पहली मंजिल में भी तीन दीर्घाएँ हैं। भवन निर्माण के समय इस बात का ध्यान रखा गया है कि कार्यालय में जाने के लिये दीर्घाओं में से होकर नहीं जाना पड़े। शैक्षणिक कार्यक्रमों जैसे—फिल्म शो, भाषणमाला आदि के लिए श्रोतृशाला की व्यवस्था की गई है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संग्रह—

वर्तमान में रानी दुर्गावती संग्रहालय के संग्रह में १३५४ प्राचीन वस्तुएँ हैं। इनमें पाषाण प्रतिमाएँ, शिलालेख, ताम्रपत्र-लेख और सोने-चाँदी के सिक्के सम्मिलित हैं। अधिकतर सामग्री जबलपुर जिले के विभिन्न स्थानों से संगृहीत की गई है। तेवर, जिलहरीघाट, लम्हेटाघाट, ग्वारीघाट, भेड़ाघाट, मनखेड़ी, पनागर, सिहोरा, टोला, उमरियापान, दर्शनी, ककरैटा, बहोरीबंद, स्लीमनाबाद, बिलहरी, कारीतलाई, दिठवारा आदि जबलपुर जिले के स्थानों के अलावा दमोह में दोनी, रिचकुरी, मढ़िया और चितराखेड़ा से, पन्ना जिले में गौरहा पहाड़ और जरगंवा से, नरसिंहपुर जिले में बरहठा से, होशंगाबाद जिले में भटगांव से, मंडला जिले में जामगांव से, टीकमगढ़ जिले में बूदौर से, रीवा जिले में गुढ से पुरातत्त्व सामग्री का संग्रह किया गया है। मालवा क्षेत्र की तीन पाषाण प्रतिमाएँ डायरेक्टर जिओलॉजिकल सर्वे मध्यप्रदेश सर्किल से प्राप्त हुई हैं।

रानी दुर्गावती संग्रहालय जबलपुर के संग्रह की पाषाण प्रतिमाओं में सर्वाधिक प्राचीन प्रतिमा गांधार शैली की बोधिसत्त्व प्रतिमा है। वह ग्वारीघाट में प्राप्त हुई थी। इस बोधिसत्त्व प्रतिमा के साथ एक अन्य अत्यन्त सुन्दर बुद्ध प्रतिमा भी प्राप्त हुई थी। वह अब भोपाल के संग्रहालय में प्रदर्शित है।

←
गणेश
११वीं शती ईस्वी
तेवर (जबलपुर)

शैव प्रतिमाएँ—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संग्रहालय की दीर्घा एक में शैव प्रतिमाएँ प्रदर्शित हैं। उनमें उमा-महेश्वर की अनेक प्रतिमाएँ, हरिहर, गणेश तथा गणेश और विघ्नेश्वरी की युगलमूर्ति, अर्धनारीश्वर आदि हैं। तेवर से प्राप्त उमा-महेश्वर अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण है। उसमें शिव-पार्वती चौसर जैसा कोई खेल खेलते हुए अंकित किये गये हैं। अन्य शैव प्रतिमाओं में पार्वती, गौरी, कार्त्तिकेय, भैरव आदि उल्लेखनीय हैं। नृत्य करते हुए गणेश जी की प्रतिमा षड्भुजी है।

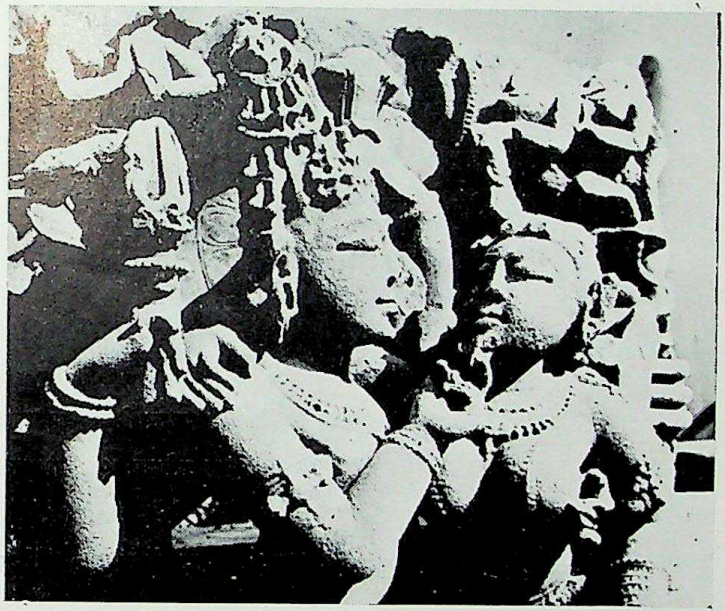

↑
उमामहेश्वर
११वीं शती ईस्वी
तेवर (जबलपुर)

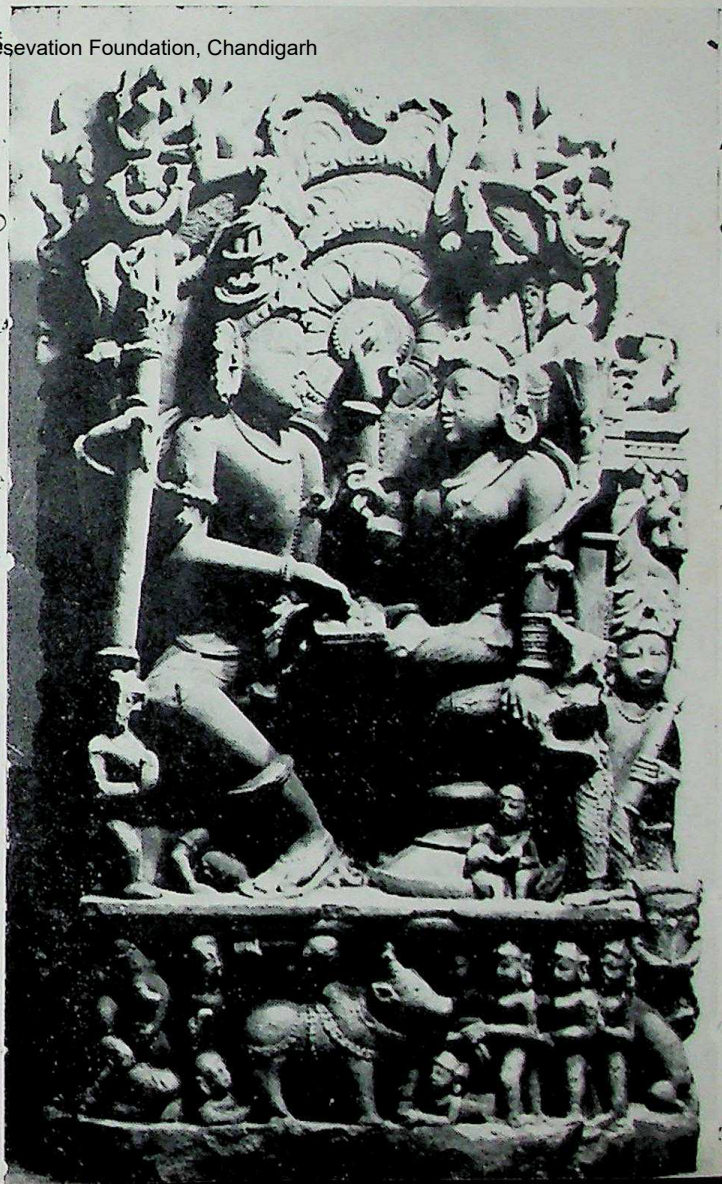

उमामहेश्वर →
११वीं शती ईस्वी
तेवर (जबलपुर)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

← विष्णु
१०वीं शती ईस्वी

वैष्णव प्रतिमाएँ—

रानी दुर्गावती संग्रहालय में विष्णु के अवतारों की अनेक प्रतिमाएँ हैं। इनमें वराह, नृसिंह, वामन, बलराम आदि प्रमुख हैं। भगवान् के त्रिविक्रम रूप की प्रतिमा भी दर्शनीय है। तेवर से प्राप्त लक्ष्मी-नारायण की प्रतिमा भव्य एवं आकर्षक है। उस प्रतिमा में विष्णु और लक्ष्मी आलिंगन मुद्रा में गरुड़ पर आसीन दिखाये गये हैं। प्रतिमा के परिकर में दस अवतारों का रूपांकन है। एक दूसरी लक्ष्मीनारायण प्रतिमा जबलपुर जिले के ही मनकेड़ी ग्राम से अवाप्त की गई है। कटनी से प्राप्त स्थानक विष्णु की प्रतिमा के परिकर में भी दसों अवतारों का अंकन किया गया है। कृष्णलीला के कुछ दृश्य भी इस संग्रहालय के संग्रह में हैं। दोनी के विष्णु मन्दिर की चौखट के स्तम्भ सुन्दर एवं अलंकृत हैं। उनमें भी भगवान विष्णु के दसों अवतारों की सुन्दर योजना की गई है।

बौद्ध प्रतिमाएँ—

गांधार शैली के बुद्ध व बोधिसत्व का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। उनके अलावा तेवर से प्राप्त एक खण्डित बुद्ध प्रतिमा, एक लेखयुक्त अवलोकितेश्वर प्रतिमा और भगवती तारा की दो छोटी-छोटी प्रतिमाएँ, इस प्रकार केवल ६ बौद्ध प्रतिमाएँ ही अब तक संग्रहालय में संगृहीत की जा सकी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जैन प्रतिमाएँ—

रानी दुर्गावती संग्रहालय के संग्रह की सभी जैन प्रतिमाएँ कलचुरि राजाओं के राज्यकाल की हैं। ये तेवर, बिलहरी, टोला (उमरियापान) और दर्शनी आदि स्थानों से संगृहीत की गई हैं। जैन प्रतिमाओं में आदिनाथ, चन्द्रप्रभ, शांतिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर की खड़ी और बैठी, दोनों प्रकार की प्रतिमाएँ हैं। २२वें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ की यक्षी अम्बिका की कारीतलाई से प्राप्त लाल बलुआ पत्थर की प्रतिमा दीर्घा ३ में प्रदर्शित हैं। इन्हीं तीर्थंकरों के यक्षों और यक्षियों की युगल मूर्तियाँ भी उसी दीर्घा में प्रदर्शित हैं।

कुछ विशिष्ट प्रतिमाएँ—

संग्रहालय की दीर्घाओं में प्रदर्शित कल्याणदेवी की बिलहरी से प्राप्त प्रतिमा कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण हैं। कुछ विद्वानों ने इसे योगिनी प्रतिमा माना है। देवी सिंह पर आसीन है, उसके बायें हाथ में धनुष और दायें हाथ में बाण हैं। कल्याणदेवी के ही समान अष्टभुजी एवं मकरवाहनी गंगा की प्रतिमा भी अद्‌भुत कलाकृति है। यह प्रतिमा भी बिलहरी से प्राप्त हुई थी।

संग्रहालय में दमोह जिले के दोनी नामक ग्राम से कुछेक दिक्पालों की प्रतिमाएँ भी संगृहीत की गई हैं। उनमें इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि महत्त्वपूर्ण हैं। कारीतलाई से अवाप्त की गई एक प्रतिमा में अग्नि और उनकी पत्नी स्वाहा को आलिगन मुद्रा में रूपांकित किया गया है। संग्रहालय में सूर्य तथा अन्य ग्रहों की प्रतिमाओं का भी संग्रह है। एक नवग्रह-पट्ट में सभी ग्रहों को उनके वाहनों के साथ दर्शाया गया है।

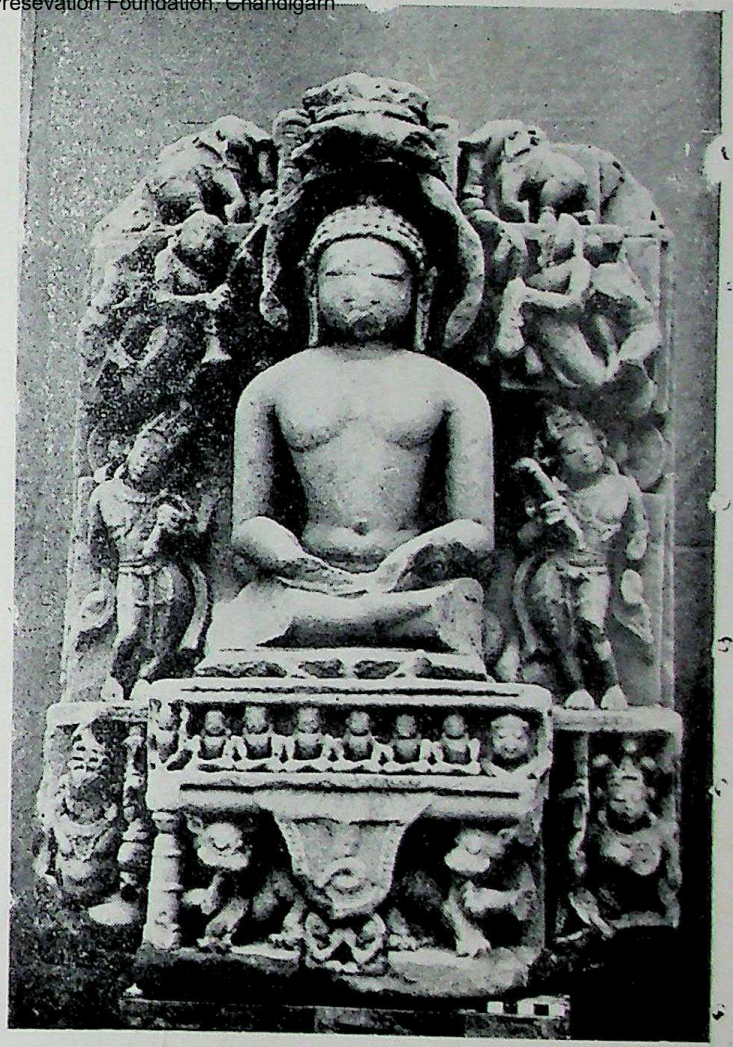

→

पार्श्वनाथ
११वीं शती ईस्वी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

← विष्णु
१०वीं शती ईस्वी

वैष्णव प्रतिमाएँ—

रानी दुर्गावती संग्रहालय में विष्णु के अवतारों की अनेक प्रतिमाएँ हैं। इनमें वराह, नृसिंह, वामन, बलराम आदि प्रमुख हैं। भगवान् के त्रिविक्रम रूप की प्रतिमा भी दर्शनीय है। तेवर से प्राप्त लक्ष्मी-नारायण की प्रतिमा भव्य एवं आकर्षक है। उस प्रतिमा में विष्णु और लक्ष्मी आलिंगन मुद्रा में गरुड़ पर आसीन दिखाये गये हैं। प्रतिमा के परिकर में दस अवतारों का रूपांकन है। एक दूसरी लक्ष्मीनारायण प्रतिमा जबलपुर जिले के ही मनकेड़ी ग्राम से अवाप्त की गई है। कटनी से प्राप्त स्थानक विष्णु की प्रतिमा के परिकर में भी दसों अवतारों का अंकन किया गया है। कृष्णलीला के कुछ दृश्य भी इस संग्रहालय के संग्रह में हैं। दोनी के विष्णु मन्दिर की चौखट के स्तम्भ सुन्दर एवं अलंकृत हैं। उनमें भी भगवान विष्णु के दसों अवतारों की सुन्दर योजना की गई है।

बौद्ध प्रतिमाएँ—

गांधार शैली के बुद्ध व बोधिसत्व का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। उनके अलावा तेवर से प्राप्त एक खण्डित बुद्ध प्रतिमा, एक लेखयुक्त अवलोकितेश्वर प्रतिमा और भगवती तारा की दो छोटी-छोटी प्रतिमाएँ, इस प्रकार केवल ६ बौद्ध प्रतिमाएँ ही अब तक संग्रहालय में संगृहीत की जा सकी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जैन प्रतिमाएँ—

रानी दुर्गावती संग्रहालय के संग्रह की सभी जैन प्रतिमाएँ कलचुरि राजाओं के राज्यकाल की हैं। ये तेवर, बिलहरी, टोला (उमरियापान) और दर्शनी आदि स्थानों से संगृहीत की गई हैं। जैन प्रतिमाओं में आदिनाथ, चन्द्रप्रभ, शांतिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर की खड़ी और बैठी, दोनों प्रकार की प्रतिमाएँ हैं। २२वें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ की यक्षी अम्बिका की कारीतलाई से प्राप्त लाल बलुआ पत्थर की प्रतिमा दीर्घा ३ में प्रदर्शित हैं। इन्हीं तीर्थंकरों के यक्षों और यक्षियों की युगल मूर्तियाँ भी उसी दीर्घा में प्रदर्शित हैं।

कुछ विशिष्ट प्रतिमाएँ—

संग्रहालय की दीर्घाओं में प्रदर्शित कल्याणदेवी की बिलहरी से प्राप्त प्रतिमा कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण हैं। कुछ विद्वानों ने इसे योगिनी प्रतिमा माना है। देवी सिंह पर आसीन है, उसके बायें हाथ में धनुष और दायें हाथ में बाण हैं। कल्याणदेवी के ही समान अष्टभुजी एवं मकरवाहनी गंगा की प्रतिमा भी अद्‌भुत कलाकृति है। यह प्रतिमा भी बिलहरी से प्राप्त हुई थी।

संग्रहालय में दमोह जिले के दोनी नामक ग्राम से कुछेक दिक्पालों की प्रतिमाएँ भी संगृहीत की गई हैं। उनमें इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि महत्त्वपूर्ण हैं। कारीतलाई से अवाप्त की गई एक प्रतिमा में अग्नि और उनकी पत्नी स्वाहा को आलिंगन मुद्रा में रूपांकित किया गया है। संग्रहालय में सूर्य तथा अन्य ग्रहों की प्रतिमाओं का भी संग्रह है। एक नवग्रह-पट्ट में सभी ग्रहों को उनके वाहनों के साथ दर्शाया गया है।

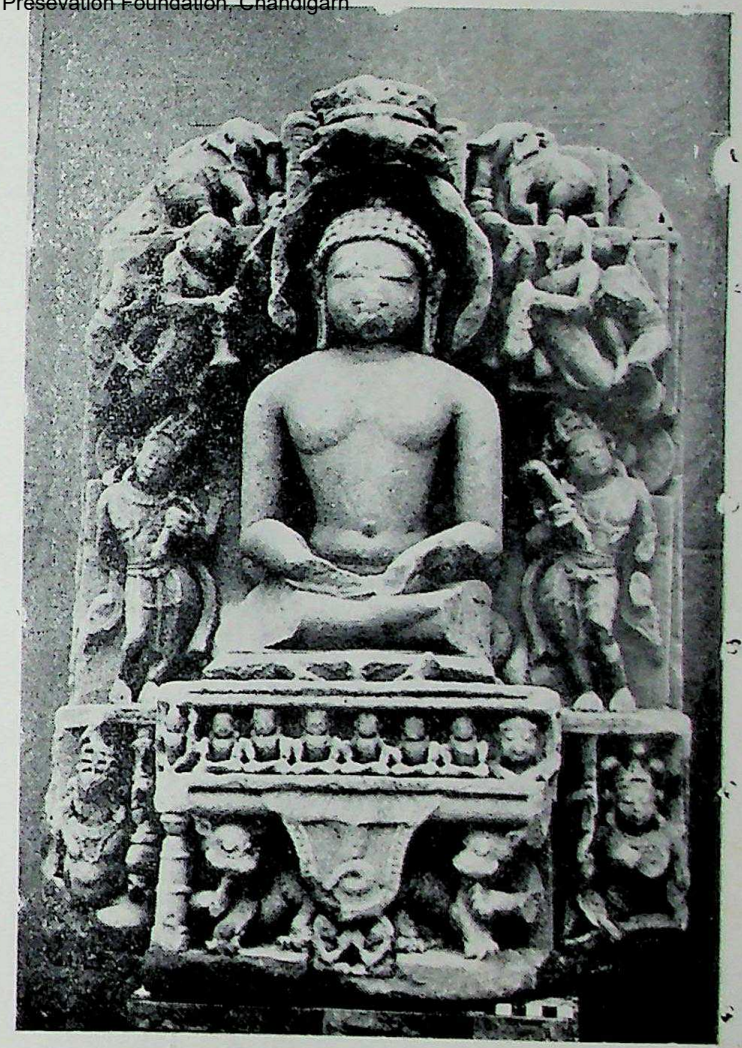

→

पार्श्वनाथ
११वीं शती ईस्वी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

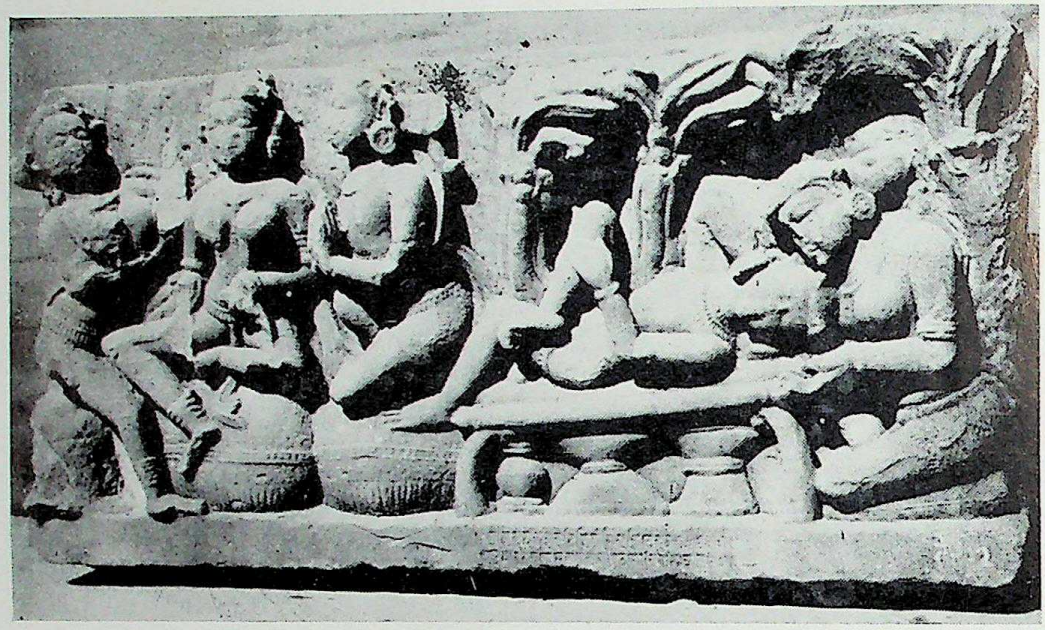

हाल कवि की गाथा सप्तशती की गाथा पर आधारित दृश्य

अप्सराओं, सुर-सुन्दरियों और नायिकाओं की मूर्तियों को दीर्घा ४ में प्रदर्शित किया गया है।

इस संग्रहालय के संग्रह की कलाकृतियों में विशेष रूप से वह शिल्पपट्ट उल्लेखनीय है जिसमें हाल कवि की गाथासप्तशती की एक गाथा में वर्णित दृश्य का अंकन किया गया है। इस शिल्प पट्ट की पीठिका पर ग्यारहवीं शताब्दी की नागरी लिपि में गाथासप्तशती की अधोलिखित प्राकृत गाथा उत्कीर्ण है।

अलिअपसुत्तअ विणिमीलि अच्छ दे सुहअ मज्झओआसं।
गण्डपरिउम्दणा पुलइ अंग ण उणे चिराइस्सम् ।। १ ।।

फलक पर उत्कीर्ण दृश्य इस वर्णन पर आधारित है। पूर्व निश्चय के अनुसार एक पुरुष उद्यान में अपनी प्रियतमा की प्रतीक्षा करता है। प्रिया किसी कारणवश निश्चित समय पर नहीं पहुँच पाती। तब वह अपनी अप्रसन्नता व्यक्त करने के लिये सोने का अभिनय करता है। उसकी प्रेयसी विलम्ब से पहुँचती है और चुपचाप उसके सिरहाने बैठकर उसके गाल पर एक चुम्बन अंकित करती है जिससे प्रेमी के अंग पुलकित हो उठते हैं। अभिनय स्पष्ट हो जाता है, फिर भी प्रिय की अप्रसन्नता की आशंका से प्रेमिका विलम्ब के लिये उससे क्षमा याचना करती है और शय्या पर स्थान देने के लिये आग्रह करती है और भविष्य में विलम्ब न होने का आश्वासन देती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्कीर्ण लेख—

संग्रहालय के संग्रह में पाँच ताम्रपत्र लेख हैं किन्तु वे अधिक प्राचीन नहीं हैं। उनका समय १८वीं-१९वीं शताब्दी है। लेकिन संग्रहालय के शिलालेख अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इनमें से जो सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण शिलालेख है, वह जबलपुर जिले के बधोरा नामक ग्राम में प्राप्त हुआ था। इस पर खुदे अक्षरों की बनावट के आधार पर शिलालेख को ईस्वी सन् की द्वितीय शताब्दी का अनुमानित किया गया है। शिलालेख से ज्ञात होता है कि अंधोढक के पौत्र राजा वाशिष्ठीपुत्र शिवघोष के किसी अमात्य ने, जो युद्ध में अविजित, अपने कुल में पूजित और ब्रह्मज्ञ था, कोई विशिष्ट कार्य करवाया था। शिलालेख कुछ खण्डित हो जाने के कारण यह ज्ञात नहीं हो सका कि उसने किस प्रकार का विशिष्ट कार्य कराया था। किन्तु इसी शिला पर जो छत्र, भृंगार एवं अश्वयुगल का दृश्य है, उससे यह अश्वमेध यज्ञ से संबंधित जान पड़ता है। शिला पर उत्कीर्ण लेख अधोलिखित प्रकार पढ़ा जाता है।

१—अंधोढकपौत्रस अनत – – – – ओ
२—वासिठिपुतस सिवधोसस
३—सगामे अप्रतिवदिनस ब्रह्मअस
४—सजातपूजितास अमचस गा – – – – – –

होशंगाबाद जिले की सोहागपुर तहसील के भटगांव नामक ग्राम से प्राप्त हुए दो शिलालेख उस क्षेत्र के नागवंशी राजाओं के संबंध में सूचना देते हैं।

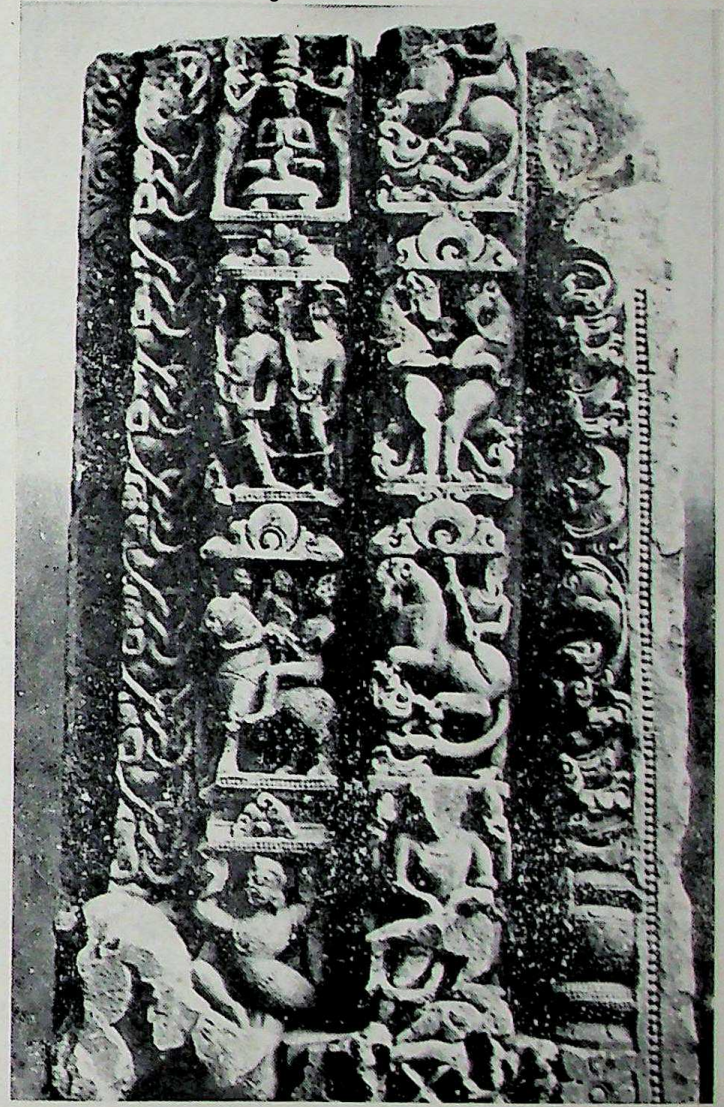

→

विष्णु मंदिर के द्वार की चौखट का भाग
दोनी (दमोह जिला)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

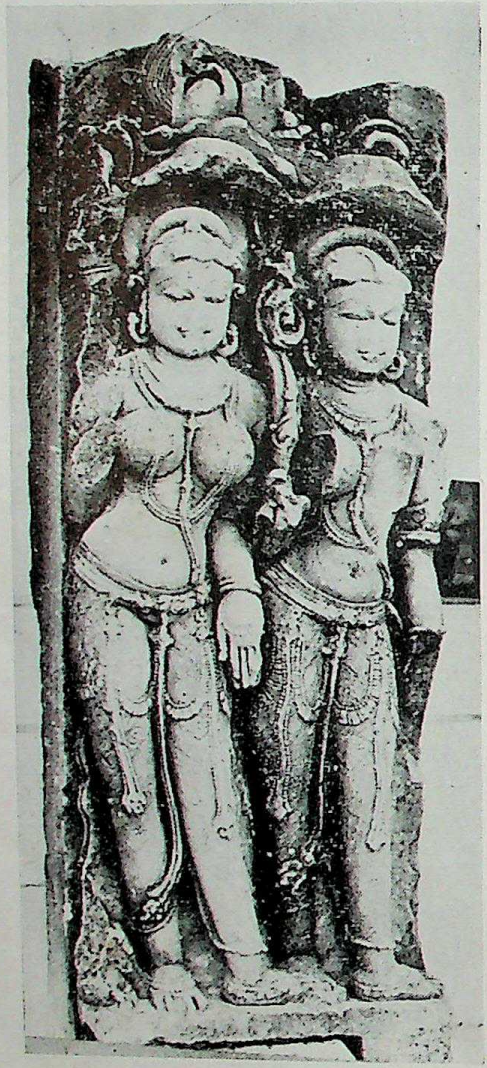

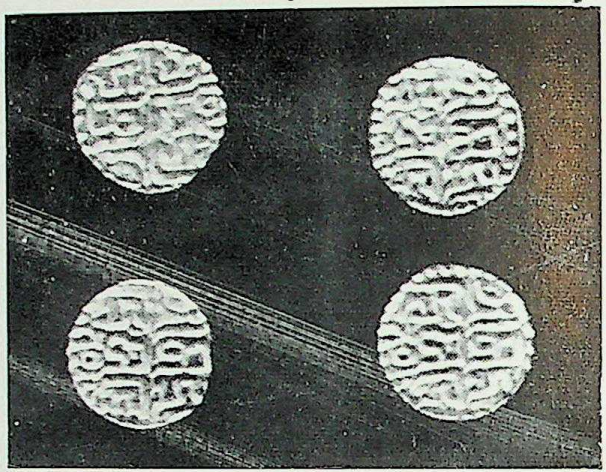

प्राचीन सिक्के—

सर्वाधिक प्राचीन सिक्का ककरैहटा (रूपनाथ के निकट) से प्राप्त पंचमार्क सिक्का है। पन्ना जिला के रैपुरा थाने के अंतर्गत ग्राम जरगवां में प्राप्त हुए कलचुरि राजा गांगेयदेव के सोने के २२ सिक्के इस संग्रहालय की विशिष्ट अवाप्ति है। इन सिक्कों पर एक ओर ११वीं शताब्दी की नागरी लिपि में राजा गांगेयदेव का नाम लिखा है और दूसरी ओर चतुर्भुज लक्ष्मी की बैठी आकृति बनी है।

भावी योजनाएँ—

इस संग्रहालय में अभी तक अधिकतर कलचुरि कालीन अवशेष ही एकत्र हो पाये हैं। जबलपुर संभाग का क्षेत्र पुरातत्त्व की दृष्टि से पर्याप्त रूपेण धनी है। इसलिये संग्रहालय का यह प्रयत्न होगा कि इस क्षेत्र के प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान काल तक के सांस्कृतिक इतिहास से संबंधित सामग्री इस भवन में एकत्र हो और शोध कर्ताओं के अध्ययन तथा सर्वसाधारण जन के अवलोकन हेतु उपलब्ध रहे। कलचुरियों के ही समान गोंड़ो ने भी इस क्षेत्र के सांस्कृतिक विकास में पर्याप्त योगदान दिया है। योजना है कि गोंड राजवंश के इतिहास और तत्कालीन संस्कृति से संबधित कक्ष की संग्रहालय में स्थापना हो। उसी प्रकार भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में जबलपुर क्षेत्र के योगदान की झांकी प्रस्तुत करने के लिये भी एक कक्ष बनाये जाने का प्रस्ताव है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

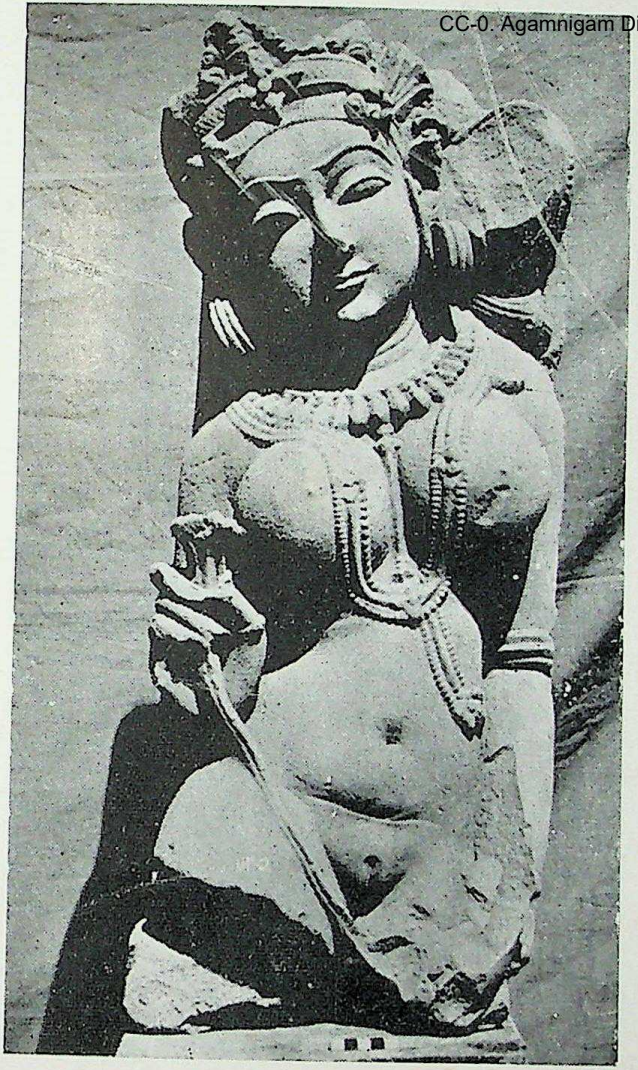

स्खलितवसना
तेवर (जबलपुर)

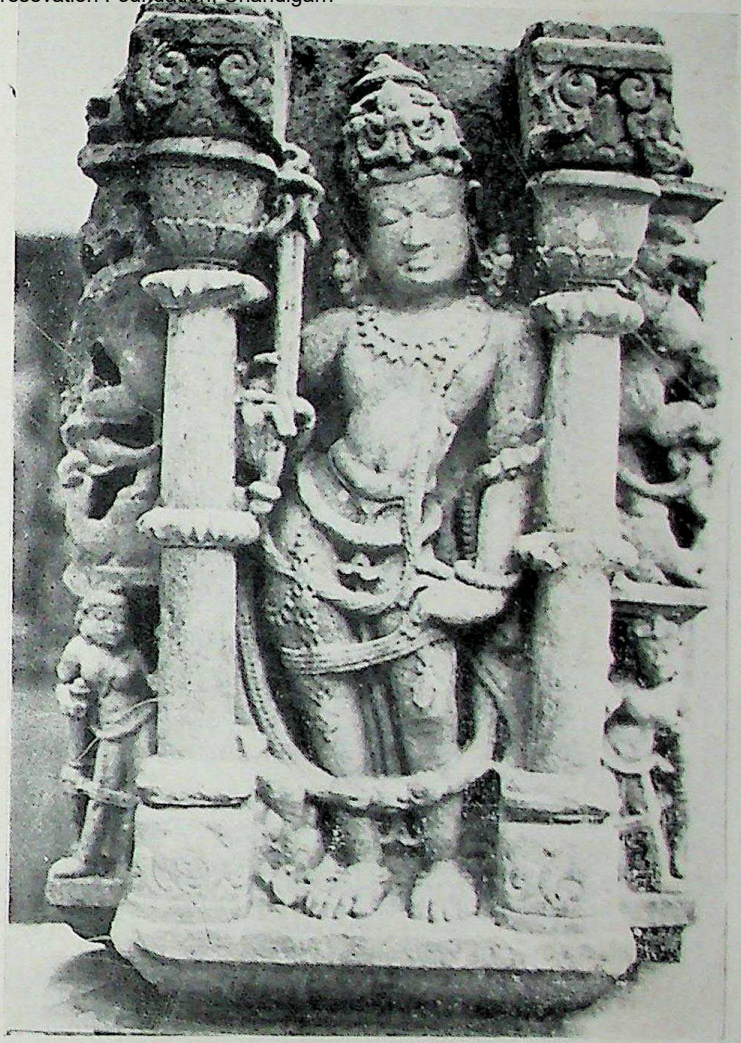

वरुण
१०वीं शती ईस्वी, दोनी (जबलपुर)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

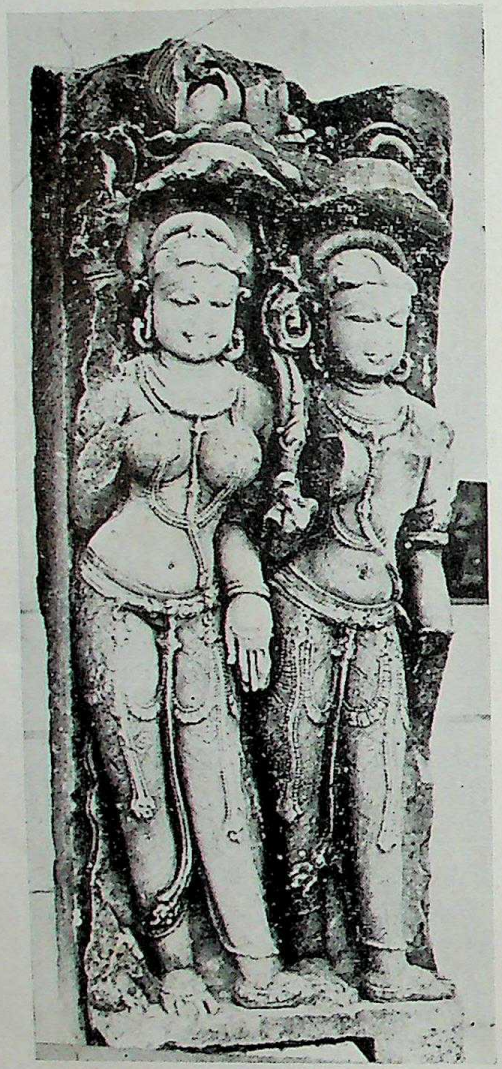

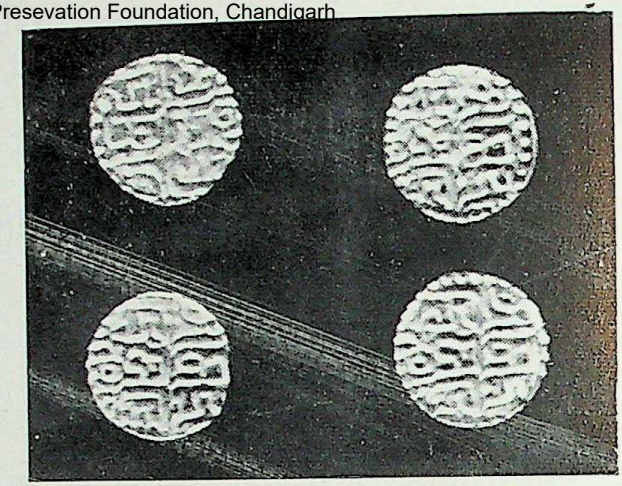

प्राचीन सिक्के—

सर्वाधिक प्राचीन सिक्का ककरैहटा (रूपनाथ के निकट) से प्राप्त पंचमार्क सिक्का है। पन्ना जिला के रैपुरा थाने के अंतर्गत ग्राम जरगवां में प्राप्त हुए कलचुरि राजा गांगेयदेव के सोने के २२ सिक्के इस संग्रहालय की विशिष्ट अवाप्ति है। इन सिक्कों पर एक ओर ११वीं शताब्दी की नागरी लिपि में राजा गांगेयदेव का नाम लिखा है और दूसरी ओर चतुर्भुज लक्ष्मी की बैठी आकृति बनी है।

भावी योजनाएँ—

इस संग्रहालय में अभी तक अधिकतर कलचुरि कालीन अवशेष ही एकत्र हो पाये हैं। जबलपुर संभाग का क्षेत्र पुरातत्त्व की दृष्टि से पर्याप्त रूपेण धनी है। इसलिये संग्रहालय का यह प्रयत्न होगा कि इस क्षेत्र के प्रागैतिहासिक काल से लेकर वर्तमान काल तक के सांस्कृतिक इतिहास से संबंधित सामग्री इस भवन में एकत्र हो और शोध कर्ताओं के अध्ययन तथा सर्वसाधारण जन के अवलोकन हेतु उपलब्ध रहे। कलचुरियों के ही समान गोंड़ों ने भी इस क्षेत्र के सांस्कृतिक विकास में पर्याप्त योगदान दिया है। योजना है कि गोंड राजवंश के इतिहास और तत्कालीन संस्कृति से संबधित कक्ष की संग्रहालय में स्थापना हो। उसी प्रकार भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में जबलपुर क्षेत्र के योगदान की झांकी प्रस्तुत करने के लिये भी एक कक्ष बनाये जाने का प्रस्ताव है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

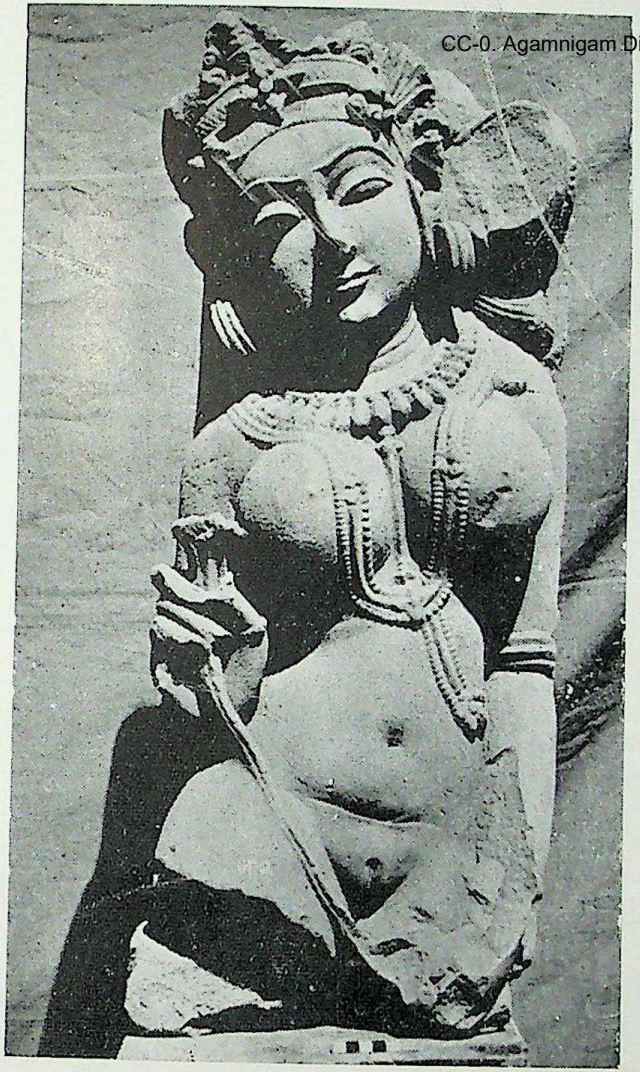

स्खलितवसना
तेवर (जबलपुर)

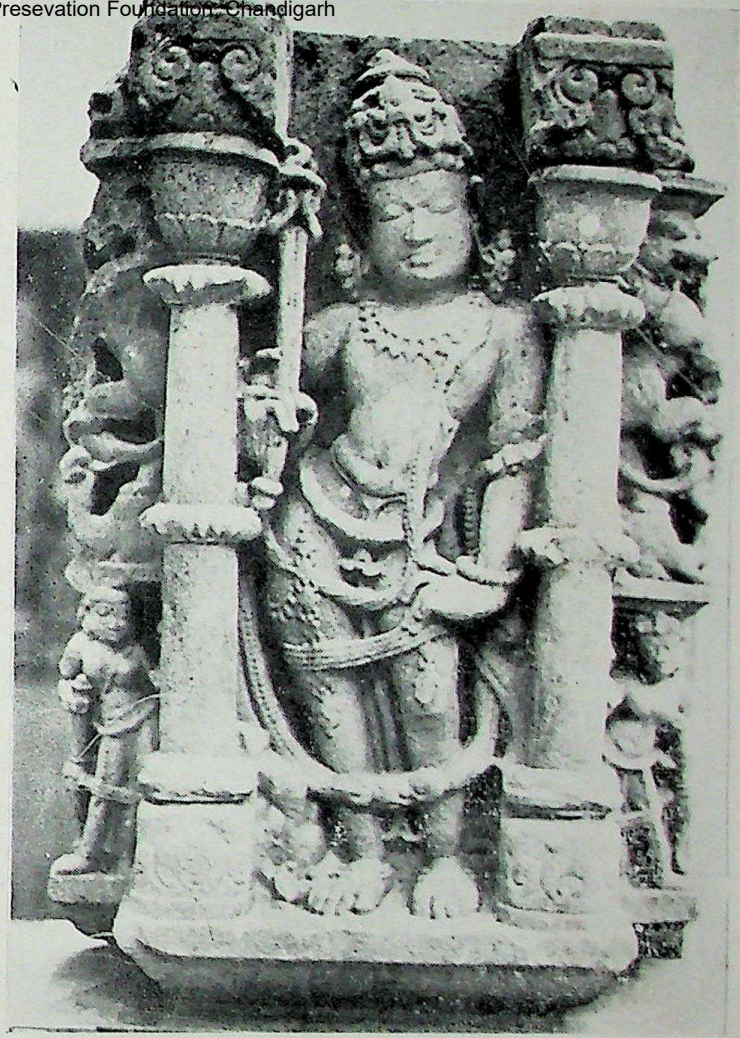

वरुण
१०वीं शती ईस्वी, दोनी (जबलपुर)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

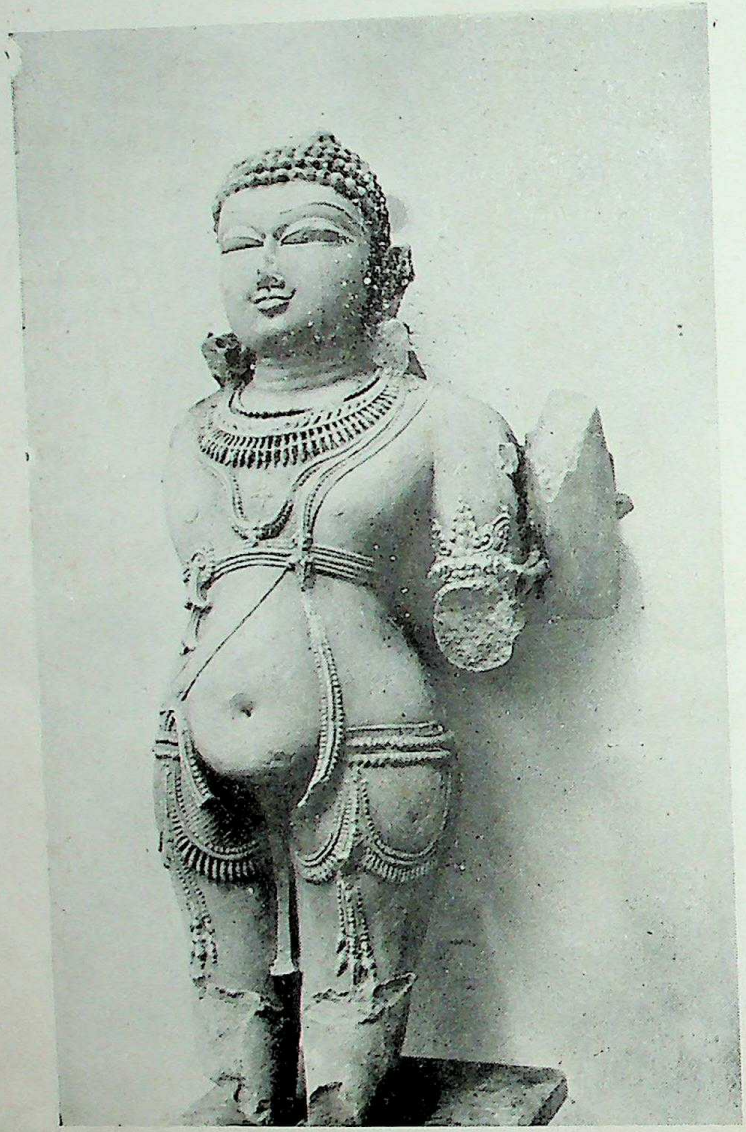

← वामन ११वीं शती

↑ नाग-युगल ११वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

4677

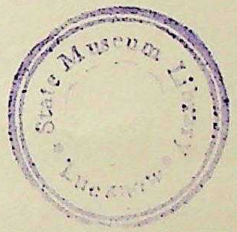

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सेना के प्रस्थान का एक दृश्य

सिंघई प्रिंटिंग प्रेस, मढ़ाताल, जबलपुर.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh